

पद १०५

(राग: झिंजोटी - ताल: त्रिताल)

गुरुवचना कानीं घेऊं। या जगीं अखण्ड (आम्हीं तुम्हीं) मुक्तचि
राहू॥ध्रु॥ शरीर हें पंचभूतांचे बनले। काल स्वभावें कर्म रचिले।
स्वस्वरूपी मायिक हें नटले। साक्षीपणें आम्हीं पाहूं॥१॥ जग हा
पंचभूतांचा साठा। कोण शैव वैष्णव हा ताठा। क्षणिक
अहंवृत्तीच्या लाटा। निश्चलात्मक रूप गाऊं॥२॥ नको दृश्य
जग नाश वासना। समाधि उन्मनि स्थिति ही नाना। स्वरूपी भव
संबंध कल्पना। सहज स्थिती सुख सेवूं॥३॥ बोध ज्ञानमार्ताण्ड
उगवला। अभेद मति दे जड जीवाला। जय हो जो प्रभु
सकलमताला। चिन्माणिक आम्हीं होऊं॥४॥